लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-31

आचार्यशान्तिदेवप्रणीतः

बोधिचर्यावतारः

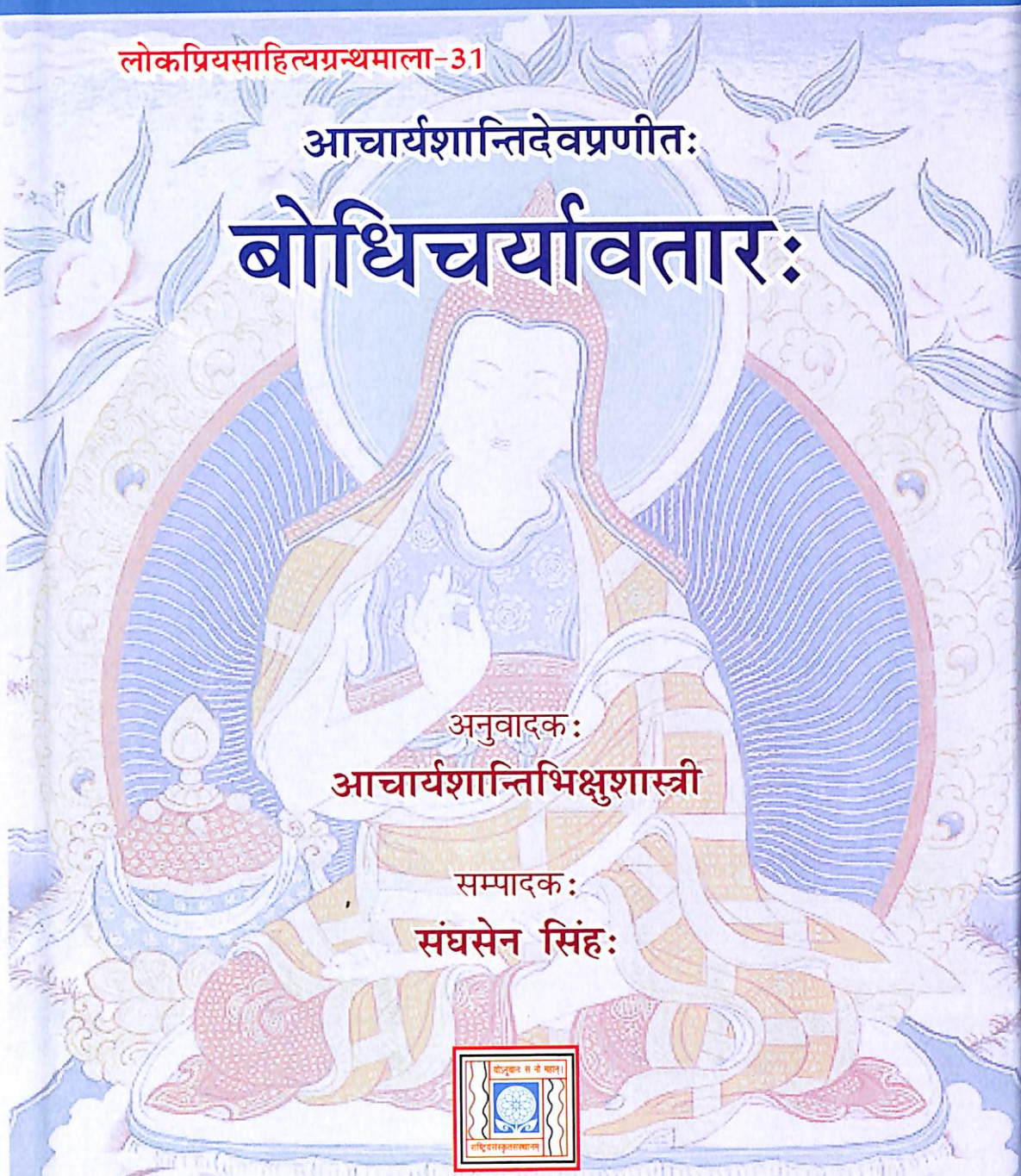

अनुवादकः

आचार्यशान्तिभिक्षुशास्त्री

सम्पादकः

संघसेन सिंहः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-31

आचार्य शान्तिदेव का

बोधिचर्यावतार

अनुवादक

शान्तिभिक्षुशास्त्री

पूर्वप्राध्यापक, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

पूर्व-आचार्य, विद्यालंकार विश्वविद्यालय, श्रीलंका

संपादक

संघसेन सिंह

पूर्व- आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली-110058

विषय सूची

पुरोवाक्— प्रो. डा. राधावल्लभत्रिपाठी, कुलपति रा. सं. सं. नवदेहली — *iii-iv*

संपादकीय वक्तव्य— प्रो. डा. संघसेन सिंह, पूर्व-आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली — *v-x*

अनुवदक-परिचय (सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षु शास्त्री) — *xi-xiii*

दो शब्द—पं० डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी — *xv-xix*

चित्र परिचय — *xvi*

उत्सर्ग — *xvii*

विषयसूची — *xix-xxiii*

भूमिका — 1–72

प्रथम परिच्छेद

1. **बोधिचित्तानुशंसा** (श्लोक 1–36) — 73–81

मंगलाचरण 1; ग्रन्थ प्रयोजन 2, 3; क्षण-संपत्ति की दुर्लभता 4, 5 सामान्य रूप में बोधिचित्तमहिमा 6–14; बोधिचित्त के दो भेद, बोधि-प्रणिधिचित्त और बोधिप्रस्थानचित्त 15; बोधिप्रणिधिचित्त और बोधिप्रस्थानचित्त में भेद 16; विशेष रूप में बोधिचित्तमहिमा 17–27; लोकस्वभाव 28; बोधिसत्त्वमाहात्म्य 29–33; बोधिसत्त्व के वैरी की गति 34; बोधिसत्त्व के हितैषी की गति 35; नमस्करणीय शरीर 36।

भूमिका

1. शान्तिदेव और उनकी कृतियां

शांतिदेव का जीवनोपाख्यान

आचार्य शान्तिदेव के संबन्ध में हम बहुत ही कम जानते हैं। संभवत: ये सातवीं शती में विद्यमान थे। लामा तारानाथ के अनुसार ये गुजरात के किसी राजा के पुत्र थे और कुछ समय तक पंचसिंह राजा के मंत्री रहे थे। अन्त में ये भिक्षु हो गये थे। ये जयदेव के शिष्य थे। जयदेव नालन्दा के पीठस्थविर धर्मपाल के उत्तराधिकारी थे। [A History of Indian Literature by M. Winternitz Vol. II pp. 365-366]

महामहोपाध्याय हरप्रसादशास्त्री ने नेपाल से प्राप्त तीन तालपत्रों के आधार पर इंडियन ऐंटीक्वेरी (Indian Antiquary 42, 1913, pp. 49-55) में शांतिदेव की जीवनी पर एक निबन्ध लिखा था। उससे इतना ही और विशेष मालूम होता है कि शांतिदेव के पिता का नाम मंजुवर्मा था। नालन्दा में ये एक कुटी बनाकर रहते थे। अत्यन्त शांत होने के कारण इनका नाम शांतिदेव था। ये भुसुक नाम की समाधि में रत रहते थे। अत: इनका नाम भुसुक भी था। (भुंजानोऽपि प्रभास्वर: सुप्तोऽपि कुटीं ततोऽपि तदेवैति भुसुकसमाधिसमापन्नत्वाद् भुसुक नामख्यातिं संघेऽपि p. 50) चर्यागीतियों में भुसुक के पद हैं। इनके विषय का एक उपाख्यान भी उस जीवनी में है। अत्यन्त शांत एवं सरल होने के कारण छात्र इन्हे बिल्कुल बुद्धू समझते थे। एक दिन धर्मदेशनामंडप में इन्हें आसन पर बिठा दिया। सोचा था कि ये कुछ बोल तो न सकेंगे फिर इन्हे खूब बनाया जायेगा। आसन पर बैठकर शांतिदेव ने जिज्ञासा की—किम् आर्षं पठामि, अर्थार्षं वा (=ऋषि वचनों का पाठ करूँ अथवा अर्थत: ऋषिवचनों का पाठ करूँ) ? यह सुनते ही सब लोग चकित

तृतीय परिच्छेद

बोधिचित्त-परिग्रह

अपायदुःखविश्रामं सर्वसत्त्वैः कृतं शुभं।
अनुमोदे प्रमोदेन सुखं तिष्ठन्तु दुःखिताः ॥ 1 ॥

दुर्गतियों के दुःख से विश्राम और सब प्राणियों द्वारा किए गए पुण्य का अनुमोदन प्रमोद से करता हूँ। दुःखित सुखी हों।

संसारदुःखनिर्मोक्षमनुमोदे शरीरिणां।
बोधिसत्त्वत्वबुद्धत्वमनुमोदे च तायिनां[1] ॥ 2 ॥

शरीरधारियों की सांसारिक दुःखों से मुक्ति का अनुमोदन करता हूँ। तायियों[1] की बोधिसत्त्वता और बुद्धता का अनुमोदन करता हूँ।

चित्तोत्पादसमुद्रांश्च सर्वसत्त्वसुखावहान्।
सर्वसत्त्वहिताधाननुमोदे च शासिनां ॥ 3 ॥

सब प्राणियों को सुख देनेवाले तथा सब प्राणियों का हित करने वाले बोधिसत्त्वों के चित्तोत्पाद समुद्रों का अनुमोदन करता हूँ।

सर्वासु दिक्षु संबुद्धान् प्रार्थयामि कृताञ्जलिः।
धर्मप्रदीपं कुर्वन्तु मोहाद् दुःखप्रपातिनां ॥ 4 ॥

सब दिशाओं में (विद्यमान) संबुद्धों से हाथ जोड़ प्रार्थना करता हूँ कि वे मोहवश दुःखपतितों के लिए धर्मदीप जलाएं।

निर्वातुकामांश्च जिनान् याचयामि कृताञ्जलिः।
कल्पाननन्तांस्तिष्ठन्तु मा भूदन्धमिदं जगत् ॥ 5 ॥

---

1. तायी = तायिन् = तादिन् = वैदिक तादृश्, अक्षरार्थ 'वैसा'। जो भाव आज 'सन्त' शब्द से प्रकट होता है, उसी के द्योतक कभी 'तायी' या 'तादी' शब्द थे। बाँद में इस शब्द पर अनेक अर्थों का आरोप हुआ है।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नवदेहली-110058